प्रकाशन तिथि : 15 दिसम्बर, 2023
प्रेषण तिथि : 19 दिसम्बर, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 19 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

विकारों के त्याग से आएगी अंतर्मन की शुद्धता

(आलोक आश्रम में हुआ सत्संग का आयोजन)

काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे विकारों का त्याग करने से ही हमारा अंतर्मन शुद्धता को प्राप्त होगा। इन विकारों के त्याग की प्रेरणा गुरु के सान्निध्य और मार्गदर्शन से ही मिल सकती है। सद्गुरु का सान्निध्य ही सत्संग है। ऐसे सत्संग का लाभ भाग्यशाली व्यक्तियों को ही मिलता है। सद्गुरु के बिना जीवन का कल्याण संभव नहीं है। उपर्युक्त बात स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज के शिष्य चरणानंद जी महाराज ने बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में 10 दिसंबर को आयोजित सत्संग में अपने प्रवचन के दौरान कही। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय धर्म सभी की रक्षा करने वाला है। इसके लिए आज क्षत्रिय को स्वयं संगठित होकर सभी को साथ लेकर चलने की कला को आत्मसात करना होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ यह कार्य कर रहा है। संघ की कार्यप्रणाली सामाजिक कार्य करते हुए अध्यात्म की ओर जाने का मार्ग है और अध्यात्म से ही परम कल्याण का मार्ग खुलता है। सत्संग कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर, लालदेव जी महाराज एवं सुखेशानंद जी महाराज का भी सान्निध्य रहा। सैंकड़ों की संख्या में बाड़मेर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाजबंधु सपरिवार कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। अंत में सामूहिक स्नहभोज भी रखा गया।

दूजोद में हुआ शहीद अशोक सिंह की प्रतिमा का अनावरण

सीकर जिले के दूजोद ग्राम में शहीद अशोक सिंह जी की प्रतिमा का अनावरण समारोह 10 दिसंबर को आयोजित किया गया। अनावरण समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले शहीदों के जीवन चरित्र को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। शहीदों के स्मारक स्थल हमारे लिए किसी तीर्थ से कम नहीं हैं। आने वाली पीढ़ियों को इन शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेकर एक मजबूत राष्ट्र बनाने में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। समारोह को संबोधित करते हुए शिवधाम मठ गाडोदा धाम के महंत श्री महावीर यति जी महाराज ने सभी से जीवन में शाकाहार को अपनाने का आह्वान किया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

संस्थापक श्री की 44वीं पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

7 दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 44वीं पुण्यतिथि पर अनेक स्थानों पर स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं द्वारा अपने प्रेरणास्रोत को श्रद्धांजलि अर्पित की एवं उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। बाड़मेर में माननीय संरक्षक महोदय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने पुण्यतिथि पर सुबह 5:30 बजे राजपूत मुक्ति धाम स्थित पूज्य श्री की छतरी पर सहयोगियों के साथ पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की। केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव, संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली एवं बाड़मेर शहर में लगने वाली शाखाओं के स्वयंसेवकों ने उपस्थित रहकर पूज्य श्री के स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में पुण्यतिथि पर भजन संध्या का आयोजन माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास की उपस्थिति में हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी व दीप सिंह जी बैण्याकाबास का भी सान्निध्य रहा। चित्तौड़गढ़ में महाराणा भुपाल पब्लिक स्कूल परिसर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने पूज्य श्री तनसिंह जी के साथ रहते हुए जो कुछ देखा व अनुभव किया, उसके संस्मरण सुनाए और बताया कि उनके जीवन से जो प्रेरणा मिली है, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती है। पूज्य तनसिंह जी उच्च कोटि के लेखक, मनोवैज्ञानिक, वक्ता, कवि, संगठक एवं राजनीतिज्ञ थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में वे हमारे बीच आज भी उपस्थित है। उनसे प्रेरणा लेकर हम अपने जीवन को समाज की सेवा में लगाएं, यही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि है। खुमाण सिंह अकोलागढ़ ने बताया कि तनसिंह जी ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने युग के अनुरूप समाज के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। शक्ति सिंह मुरलिया ने कहा कि पूज्य श्री ने अभावों में जीते हुए श्रेष्ठता प्राप्त की तथा उनके द्वारा स्थापित श्री क्षत्रिय युवक संघ आज वटवृक्ष बन चुका है। जौहर स्मृति संस्थान के महामंत्री तेजपाल सिंह खोर, राजेंद्र सिंह मुरोली, कृष्ण पाल सिंह ब्यावर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए जोगेंद्र सिंह छोटाखेड़ा ने संघ व पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया एवं जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

संस्थापक श्री की 44वीं पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

(पेज एक से लगातार)

नरेंद्र सिंह नरधारी, दिलीप सिंह रूद, सूर्यकरण सिंह आकोला गढ़ सहित अनेकों सहयोगी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। शिव प्रांत में मातेश्वरी शाखा भिंयाड़ में भी कार्यक्रम आयोजित करके पूज्य श्री तनसिंह जी को श्रद्धांजलि दी गई। प्रान्त प्रमुख राजेन्द्र सिंह भिंयाड़ ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने हमारे समाज को स्वधर्म का पालन करते हुए सृष्टि का उपयोगी अंग बनने का मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में दिया। इस मार्ग पर चलना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उपस्थित सभी सहयोगियों ने पूज्य तनसिंह की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर संदीप जाँगिड़, बुद्धकरण दान, महेंद्र सिंह नवातला, भोपाल सिंह जालेला, गिरवर सिंह राजपुरोहित, भंवर दान, ज्ञानगिरी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। नागौर स्थित श्री अमर राजपूत छात्रावास में भी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। छात्रावास स्थित करणी माता परिसर में छात्रावास अधीक्षक मदन सिंह छापडा ने छात्रों सहित पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए एवं कहा कि संघ समाज में अपनी कार्य प्रणाली से नवीन उर्जा का संचार कर समाज के युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है जिससे युवा अपने पूर्वजों के पदचिह्नों पर चलते हुए राष्ट्र के विकास में सहयोगी बनें। बालोतरा स्थित वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में भी कार्यक्रम रखा गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक चंदन सिंह चांदेसरा ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी का जीवन आदर्श संत जैसा था, वे हर दृष्टिकोण से आदर्श व्यक्तित्व थे। उनसे हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन गोविंद सिंह गुगड़ी द्वारा किया गया। टापरा गांव स्थित नागणेची माता मंदिर में भी कार्यक्रम हुआ जिसमें प्रांतप्रमुख चंदन सिंह थोब ने पूज्य श्री के जीवन से कर्मठता और संयम की प्रेरणा लेने की बात कही। राण सिंह टापरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। बालोतरा संभाग में माँ भगवती छात्रावास सिवाना, सरोज बाल निकेतन स्कूल कुंडल, रेवाडा जेतमाल, कल्ला रायमलोत छात्रावास सिवाना, बाल गोपाल छात्रावास सिवाना, श्री राहिंग जी राठौड़ मन्दिर कांखी, श्री जवाहर राजपूत छात्रावास पाटोदी, न्यू आदर्श विद्या मंदिर थोब, वरिया, वरेचा आदि स्थानों पर भी कार्यक्रम आयोजित हुए। दुर्गा महिला विकास संस्थान बालिका छात्रावास नाथावतपुरा, सीकर में भी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित हुआ। चूरू प्रान्त के रतनगढ़ क्षेत्र के गांव नुवां व नोहर क्षेत्र के गांव भूकरका में भी श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखे गए। गुजरात में पाटन प्रान्त के राधनपुर में भी कार्यक्रम हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक सहदेव सिंह मूली और वनराज सिंह भैंसाना उपस्थित रहे। भुपाल नोबल्स विश्विद्यालय की महाराणा सांगा शाखा, ओस्तवाल नगर उदयपुर, नेतावलखेड़ा (चितौड़गढ़), वीरमदेव राजपूत छात्रावास (जालौर), बावतरा स्थित नागणेच्या मेडिकल स्टोर, छापड़ा (नागौर) आदि स्थानों पर भी कार्यक्रम आयोजित हुए।

जैसलमेर स्थित संभागीय कार्यालय तनाश्रम में भी स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य तनसिंह जी को पुष्पांजलि अर्पित करके श्रद्धांजलि दी गई। हैदराबाद में सिकंदराबाद स्थित संजीवैया पार्क में 10 दिसंबर को श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखा गया जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक उपस्थित रहे। 10 दिसंबर को ही भोपालगढ़ प्रांत में खारिया खंगार में कार्यक्रम हुआ जिसमें प्रांतप्रमुख चैन सिंह साथिन सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

शोकसभा में नशामुक्त आयोजन और शिक्षा हेतु दान की अनुकरणीय पहल

जोधपुर में बालेसर पंचायत समिति के बस्तवा माताजी गांव में स्वर्गीय उम्मेद सिंह इंदा (भारतीय सेना की 8वीं राजपूताना राइफल्स से सेवानिवृत्त) की शोकसभा के अवसर पर उनके परिजनों द्वारा नशामुक्त आयोजन किया गया, साथ ही समाज के युवाओं को शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राजपूत शिक्षा कोष में आर्थिक सहयोग भी किया गया। क्षेत्र की पांच गौशालाओं, राजपूत धर्मशाला हरिद्वार के लिए आर्थिक सहयोग एवं पक्षियों हेतु चुग्गे इत्यादि की व्यवस्था हेतु भी सहयोग किया गया। इस अनुकरणीय पहल की सभी उपस्थित क्षेत्रवासियों द्वारा सराहना की गई एवं इससे प्रेरणा लेकर सभी सामाजिक आयोजनों को नशामुक्त रखने की बात कही। स्वर्गीय इंदा के पुत्र नरपत सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक है।

मिर्जा राजा मानसिंह आंबेर की जयंती पर सुखदेव सिंह को दी श्रद्धांजलि

जयपुर स्थित श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति परिसर में मिर्जा राजा मानसिंह आंबेर की जयंती प्रतिवर्ष मनाई जाती है। इस वर्ष भी 6 दिसंबर को उनकी 473वीं जयंती का कार्यक्रम तय था लेकिन 5 दिसंबर को सामाजिक कार्यकर्त्ता सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की हत्या के कारण कार्यक्रम को श्रद्धांजलि सभा में परिवर्तित कर दिया गया। सभा में उपस्थित सदस्यों ने दुखद घटना पर अपनी संवेदना प्रकट की, साथ ही समिति द्वारा राज्य सरकार से गोगामेड़ी के परिजनों को सुरक्षा देने और अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग भी की गई।

जन्म शताब्दी समारोह के निमित्त विशेष शाखाओं व संपर्क बैठकों का आयोजन

समाजबंधुओं को दिल्ली में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण देने के लिए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से संपर्क किया जा रहा है। इसी क्रम में चित्तौड़गढ़ के खोर गांव स्थित श्री सम्मेलन महादेव मंदिर में 10 दिसंबर को विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने संघ के उद्देश्य व कार्य प्रणाली के बारे में विस्तार से बताया और दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में 28 जनवरी 2024 को आयोजित होने जा रहे मुख्य जन्म शताब्दी समारोह में अधिक अधिक संख्या में भाग लेने का निवेदन किया। शाखा में सीकेएसबी अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह खोर, जौहर स्मृति संस्थान के महामंत्री तेजपाल सिंह खोर ने भी अपने विचार रखे और सभी उपस्थित समाजबंधुओ से समारोह में शामिल होने एवं अन्य समाजबंधुओ तक भी निमंत्रण पहुंचाने की बात कही। कार्यक्रम स्थल पर संघ साहित्य, शताब्दी वर्ष पताकाएं एवं विशेष ट्रेन के टिकट भी समाजबंधुओ को उपलब्ध कराए गए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मातृशक्ति भी उपस्थित रही। शाखा के पश्चात स्वयंसेवकों द्वारा घंटियावली, खरडी बावडी, चित्तौड़ी खेड़ा, मधुवन, सेंथी आदि क्षेत्रों में संपर्क करके जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। बीकानेर शहर में स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में भी 10 दिसंबर को जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें दिल्ली में होने वाले मुख्य शताब्दी समारोह की तैयारियों पर चर्चा हुई। संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। 10 दिसंबर को ही श्री तंवरावाटी राजपूत छात्रावास, नीमकाथाना में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह को लेकर बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने पूज्य श्री तनसिंह जी एवं संघ का परिचय दिया। सुमेर सिंह नेवरी व गिरवर सिंह बुधोली ने भी अपने विचार रखे। बैठक में स्थानीय समाजबंधुओं के साथ क्षेत्र के सभी गांवों में सम्पर्क करने व अधिकतम संख्या में समारोह में शामिल होने पर चर्चा हुई एवं इसके लिए दायित्व निर्धारित किए गए। कार्यक्रम के अंत में सामाजिक कार्यकर्ता सुखदेव सिंह गोगामेड़ी को श्रद्धांजलि भी दी गई। जालौर में धानसा गांव स्थित श्री जालंधर नाथ मंदिर में एक संपर्क बैठक 11 दिसंबर को आयोजित की गई जिसमें धानसा, सेरणा व मोदरान गांवों के समाजबंधु सम्मिलित हुए। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने जन्म शताब्दी वर्ष संदेश यात्रा एवं विशेष ट्रेन की बुकिंग के बारे में जानकारी दी एवं सभी को दिल्ली आने का निमंत्रण दिया। इसी दिन रानीवाड़ा काबा में भी एक संपर्क बैठक रखी गई। 11 दिसंबर को सिरोही जिले के वेरा जेतपुरा गांव में भी बैठक आयोजित हुई। पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर 10 दिसंबर को राजपूत भीम छात्रावास कोटा और अमर कंवर बालिका राजपूत छात्रावास बूंदी में भी बैठकें आयोजित की गई। जैसलमेर संभाग के चांधन प्रांत में प्रांत प्रमुख उम्मेद सिंह बडोडागांव ने स्वयंसेवकों के साथ मिलकर चांधन, सांवला, सगरा, चांधन, करमो की ढाणी, डेलासर, सोढ़ाकोर आदि गांवों में संपर्क किया।

मध्य गुजरात संभाग की कार्ययोजना बैठक संपन्न

मध्य गुजरात संभाग के स्वयंसेवकों की कार्ययोजना बैठक 3 दिसंबर को काणेटी गांव में आयोजित हुई। बैठक में 22 दिसंबर को संघ स्थापना दिवस पर अहमदाबाद में होनेवाले कार्यक्रम की तैयारियों पर चर्चा की गई। दिल्ली में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के लिए संभाग स्तर पर की जा रही तैयारियों और संपर्क अभियान पर भी चर्चा हुई। संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे।

संपादकीय

शस्त्र, शक्ति और क्षत्रियत्व

क्षत्रिय और शस्त्र का सदा से अटूट नाता रहा है। रक्षक और योद्धा जाति के रूप में क्षत्रिय ने सदैव शस्त्र को धारण किए रखा है। विजयादशमी जैसे पर्व का भी इसीलिए क्षत्रियों में विशेष महत्त्व समझा जाता है जब शास्त्र के साथ शस्त्र का भी पूजन किया जाता है। शस्त्र के साथ हमारे इस शाश्वत संबंध के कारण ही शस्त्र की आवश्यकता, उसे धारण करने के अधिकार आदि विषयों में हमारी रुचि भी स्वाभाविक रूप में जगती है। हाल ही में जयपुर में एक सामाजिक कार्यकर्ता की गोली मार कर हत्या की दुखद घटना के बाद शस्त्र रखने के अधिकार के संबंध में अनेक प्रकार की चर्चाएं फिर से सामने आई। अनेक लोगों द्वारा बढ़ते हुए अपराध के मद्देनजर हथियार के लाइसेंस की प्रक्रिया को सरल करने और आम आदमी को हथियार रखने का अधिकार देने की बात का समर्थन किया गया, तो कई लोग निराशा में यह भी कहते हुए देखे गए कि कलम से ज्यादा आज भी बंदूक ही ताकतवर है। कई साथियों ने क्षत्रिय जाति को हथियार रखने की विशेष छूट का समर्थन इस आधार पर किया कि क्षत्रिय को शस्त्र धारण करने का शास्त्रसम्मत अधिकार है। ऐसी ही अनेक बातें कही गई लेकिन हथियार रखने के अधिकार, क्षत्रिय और शस्त्र के संबंध आदि विषयों पर सम्यक विमर्श करने की आवश्यकता है।

सर्वप्रथम इस समस्या के प्रशासनिक और नीतिगत पहलू को समझने की आवश्यकता है। जिस तरह से हथियारबंद अपराधियों द्वारा हिंसक अपराधों की घटनाएं निरंतर बढ़ रही हैं, उसको दृष्टिगत रखते हुए अनेक लोगों का यह मत होता है कि सामान्य व्यक्ति को भी अपनी सुरक्षा के लिए हथियार रखने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन भारत में प्रशासन की सामान्य नीति यही रहती है कि ऐसा करने पर बंदूक संस्कृति (गन कल्चर) को बढ़ावा मिलेगा और हिंसक घटनाओं में वृद्धि होगी, साथ ही कानून व्यवस्था को भी गंभीर खतरा पैदा होगा। प्रशासन का यह भी तर्क होता है कि लोगों की सुरक्षा का कार्य पुलिस और प्रशासन का है और सामान्य व्यक्तियों को हथियार देकर उनकी सुरक्षा उनके जिम्मे छोड़ना एक प्रकार से प्रशासन की असफलता और उस असफलता की स्वीकारोक्ति होगी। नीति निर्माता वर्ग और प्रशासन द्वारा इन तर्कों की पुष्टि के लिए अमेरिका जैसे देशों का उदाहरण भी दिया जाता है जहां 'गन कल्चर' के निर्बाध प्रसार के कारण हिंसक घटनाओं व बंदूक संबंधी दुर्घटनाओं में अत्यधिक वृद्धि हुई है। प्रशासन की यह नीति और तर्क सही और तथ्यपूर्ण है कि बंदूक संस्कृति लोकतांत्रिक और सभ्य समाज के अनुकूल नहीं है और अमेरिका जैसे देश में बंदूकों तक अत्यधिक सुलभ पहुंच के कारण अपराधिक घटनाओं से भी अधिक जनहानि दुर्घटनापूर्वक बंदूक के चलने से दर्ज होती है। लेकिन प्रशासन के ये तर्क और तथ्य सही होते हुए भी एकांगी है। क्योंकि प्रशासन का दायित्व केवल कड़ी लाइसेंस पद्धति लागू करके सामान्य जन के हाथों तक हथियार सुलभता से न पहुंचने देना ही नहीं है बल्कि उस से भी कहीं अधिक आवश्यकता इस बात की है कि अपराधी प्रवृत्ति के लोगों की अवैध हथियारों तक सुलभ पहुंच को रोका जाए। ऐसा नहीं होने पर सामान्य जनता के लिए इधर कुआं और उधर खाई वाली स्थिति हो जाती है क्योंकि कानून सम्मत ढंग से जीवन जीने वाले सामान्य व्यक्ति को अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं तो हथियार रखने का अधिकार प्रशासन सरलता से नहीं देता, वहीं दूसरी ओर अपराधियों तक अवैध हथियारों को पहुंचने से रोकने में विफल होकर प्रशासन उसकी सुरक्षा का दायित्व भी नहीं निभा पाता। इसीलिए प्रशासन को अपने दृष्टिकोण के इस एकांगीपन को दूर करना होगा और इसके लिए जितनी कड़ाई हथियार के लाइसेंस की प्रक्रिया में प्रशासन द्वारा दिखाई जाती है उससे कहीं अधिक कड़ाई अवैध हथियारों के उत्पादन, बिक्री और आधिपत्य को रोकने में दिखाना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं होता है तो जनता में असंतोष की स्वाभाविक रूप से वृद्धि होगी और हथियार प्राप्त करने की होड़ भी समाज में बढ़ेगी जिसका परिणाम अंततः हिंसक घटनाओं और दुर्घटनाओं की वृद्धि के रूप में ही सामने आएगा।

हथियारों के वैध-अवैध आधिपत्य के प्रश्न का दूसरा पहलू सामाजिक है, जिस पर भी विचार करना आवश्यक है। अपराधी भी समाज का ही अंग है चाहे वह अवांछित और हानिकर अंग ही हो। अपराधी को सजा देने मात्र की बात करके कोई भी समाज उस अपराधी के निर्माण में अपनी भूमिका को झुठला नहीं सकता। अपराधी को पकड़ना, उसे सजा देना निश्चित रूप से आवश्यक है लेकिन समाज में अपराध के पनपने के कारणों को जानना और उनके निवारण का उपाय करना भी समाज का ही दायित्व है अन्यथा अपराध और अपराधी निरंतर बढ़ते रहेंगे। आज युवा बल्कि कहें कि किशोर पीढ़ी में अपराधियों और हथियारों को लेकर आकर्षण असामान्य रूप से बढ़ता जा रहा है और येन केन प्रकारेण वे हथियार प्राप्त करने का प्रयास भी करते हैं। इस आकर्षण का कारण क्या है, इसे समझना आवश्यक है। वास्तव में कोई भी व्यक्ति बंदूक जैसे हथियारों से अपनी निर्बलता, हीनभावना और कायरता को छिपाने का ही प्रयास करता है। इस कायरता, निर्बलता और हीनभावना को युवाओं में पनपने से रोकना समाज का ही दायित्व है और ऐसा करके ही किशोर और युवाओं को हथियार, त्वरित धन आदि के आकर्षण में पड़कर अपराध के दलदल में फंसने से रोका जा सकता है। साथ ही, शस्त्र और उसके प्रयोग के बारे में सामाजिक मान्यताओं को परिष्कृत करने की भी आवश्यकता है। वास्तव में कोई भी युग हो, कैसा भी कालखंड हो शस्त्र-शक्ति पूर्ण रूप से अप्रासंगिक कभी नहीं हो सकती। मनुष्य के भीतर मानवता भी है, दिव्यता भी है तो पशुता भी विद्यमान है। न्यूनाधिक मात्रा में इन सभी की उपस्थिति बनी ही रहती है और इसीलिए पशुता के नियंत्रण और नियमन करने के लिए शस्त्र-शक्ति की उपलब्धता भी आवश्यक है, इसलिए लोकतंत्र में भी पुलिस और सेना जैसी व्यवस्थाएं अनिवार्य है। वास्तव में, मुख्य प्रश्न शस्त्रविहीन समाज के निर्माण का नहीं बल्कि शस्त्रधारण करने वाले सच्चे अधिकारी लोगों के निर्माण का है। महत्वपूर्ण शस्त्र नहीं बल्कि वह हाथ है जो शस्त्र को धारण करता है। वह हाथ राम का है अथवा रावण का, कृष्ण का है अथवा कंस का, प्रताप का है अथवा अकबर का, दुगार्दास का है अथवा औरंगजेब का, यही बात महत्वपूर्ण है। केवल बंदूक और तलवार ही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार की शक्ति का प्रतीक शस्त्र हो, चाहे वह कलम या सत्ता और संसाधन ही क्यों ना हो, उसको धारण करने वाले व्यक्ति का विवेकवान, करुणावान, संयमी, साहसी और मर्यादित होना अनिवार्य है। ऐसे ही व्यक्तियों के अधिकार में रहकर कोई भी शक्ति कल्याणकारी बन सकती है, अन्यथा अविवेकी और दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों द्वारा शक्ति का दुरुपयोग सदैव दूसरों को सताने में ही किया जाता है। इसीलिए शस्त्र उठाने का अधिकारी भारतीय संस्कृति में क्षत्रिय को माना गया जिसमें शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता संघर्षशीलता, दान और ईश्वरीय भाव जैसे गुण अनिवार्य रूप से हों। लेकिन आज यदि हम चारों ओर देखें तो प्रत्येक प्रकार की शक्ति पर अधिकांशतया क्षत्रियत्व के गुणों से हीन व्यक्तियों का ही अधिकार है और इसीलिए ये शक्तियां अधिकांशतया मानवता के कल्याण में ही प्रयुक्त नहीं हो रही हैं। इसलिए सर्वप्रथम ऐसे व्यक्तियों के निर्माण की आवश्यकता है जो शक्ति को धारण करने के वास्तविक पात्र हों अर्थात सच्चे क्षत्रिय हों। ऐसे व्यक्तियों के निर्माण के पश्चात ही उनके द्वारा शस्त्र शक्ति को भी धारण करना उचित है और अन्य सभी प्रकार की शक्तियों को भी। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसीलिए समाज में क्षत्रियत्व के निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर कार्य कर रहा है जिससे वे सभी प्रकार की शक्ति के धारक बनकर उन शक्तियों को मानव कल्याण में नियोजित कर सकें।

मेवाड़ का गुहिल वंश

इस समय दिल्ली पर लोदी वंश का शासन था। सिकन्दर लोदी के समय महाराणा सांगा ने दिल्ली के अधीनस्थ इलाकों को अपने राज्य में मिलाना प्रारम्भ कर दिया, महाराणा सांगा से भयभीत सिकंदर लोदी ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। वि.सं. 1574 में उसके देहान्त के बाद उसका पुत्र इब्राहिम लोदी दिल्ली का शासक बना। शासक बनते ही एक विशाल सेना के साथ मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। महाराणा भी अपनी सेना के साथ उससे मुकाबले के लिए आगे बढ़े। हाड़ौती की सीमा पर खातोली नामक गांव के पास दोनों सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध हुआ। महाराणा के अद्भुत शौर्य व युद्ध संचालन के कारण मेवाड़ की विजय हुई। सुल्तान को अपनी सेना सहित युद्ध से भागना पड़ा। जबकि उसके एक शहजादे को महाराणा द्वारा बंदी बना लिया गया। जिसे कुछ समय कैद के बाद उसके द्वारा क्षमा याचना करने पर दण्ड वसूल कर छोड़ दिया गया। इस युद्ध में महाराणा सांगा का बायां हाथ तलवार से कट गया और घुटने पर तीर लगने से उनका पैर भी खराब हो गया। खातोली की पराजय से अपमानित इब्राहिम लोदी ने पुनः तैयारी की और कुछ समय बाद पुनः एक विशाल सेना चित्तौड़ की ओर रवाना की। इस सेना में उसके सेनानायक मियां हुसैन खां जरबख्श, मियां खानखाना फारमुली और मियां मारूज मुख्य थे जबकि सेना का संचालन मियां माखन कर रहा था। इसी मियां हुसैन खां से किसी बात पर नाराज होकर मियां माखन ने उसे बंदी बनाना चाहा, हुसैन शाही खेमे से भाग कर महाराणा सांगा की शरण में जा पहुंचा। महाराणा ने उसे आश्रय दिया। धौलपुर के नजदीक बाड़ी नामक स्थान पर दोनों सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ। राजपूतों के तीव्र जोरदार आक्रमण ने लोदी की सेना में भगदड़ मचा दी। सुल्तान की सेना के पांव उखड़ गए, बड़ी संख्या में मुस्लिम सेना मारी गई। मियां माखन ने युद्ध क्षेत्र से भागकर अपनी जान बचाई। महाराणा को विजयी प्राप्त हुई। भागती हुई मुस्लिम सेना का राजपूत सेना ने बयाना तक पीछा किया। इस युद्ध में महाराणा सांगा ने मालवा का कुछ भाग जो सिकन्दर लोदी के अधिकार में था अपने राज्य में मिला लिया। दिल्ली सुल्तान के विरुद्ध इन दो विजयों ने मेवाड़ के उत्तर भारत की सर्वोच्च शक्ति बना दिया। इस समय मालवा पर महमूद द्वितीय का शासन था। अमीरों के व्यवहार से भयभीत महमूद मांडू से भाग निकला, तब अमीरों ने उसके भाई साहिब खां को मालवा का सूबेदार बना दिया। महमूद के इस आपतिकाल में मालवा के एक प्रबल राजपूत सरदार मेदिनीराय महमूद के उद्धारक बने, उन्होंने साहिब खां को परास्त कर महमूद को पुनः मांडू की गद्दी पर बैठाया। सुल्तान महमूद द्वितीय ने उन्हें अपना प्रधानमंत्री बनाया। **(क्रमशः)**

शार्दुल राजपूत छात्रावास के पूर्व छात्रों का स्नेहमिलन संपन्न

बीकानेर स्थित श्री शार्दुल राजपूत छात्रावास के पूर्व छात्रों का दो दिवसीय स्नेहमिलन कार्यक्रम 3 व 4 दिसंबर को संपन्न हुआ। स्नेहमिलन कार्यक्रम में 3 दिसंबर को बीकानेर प्रवास पर आए हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास एवं 4 दिसंबर को श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी भी शामिल हुए। महावीर सिंह जी, जो स्वयं भी छात्र जीवन में शार्दुल छात्रावास में रह चुके हैं, ने उपस्थिति साथियों से चर्चा करते हुए कहा कि यहां आकर छात्र जीवन की यादें ताजा हो गई। समाज के छात्रावास में रहने से सामाजिक भाव दृढ़ होता है। वह भाव ही ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन की प्रेरणा देता है। हम जहां भी रहें, जिस भी स्थिति में रहें, समाज के प्रति हमारा जुड़ाव बना रहना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज के साथ हमें जीवन भर के लिए जोड़ने का कार्य करता है। उन्होंने बताया कि यह वर्ष पूज्य श्री तनसिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष है, जिसमें उनके संदेश को सभी तक

पहुंचाने का उद्देश्य लेकर कार्य किया जा रहा है। इसमें हम सभी को सहभागी बनना है।

माननीय संघप्रमुख श्री ने छात्रावास में रहने के दौरान जीवन पर पड़ने वाले गहरे और स्थाई प्रभाव की बात कही और बताया कि छात्र जीवन में छात्रावास हमारे परिवार की भांति होता है जहां से हम जीवन जीने का नया ढंग सीखते हैं। ये ढंग कैसा होगा, यह उस छात्रावास के वातावरण पर निर्भर करता है। इसलिए समाज के छात्रावासों में सकारात्मक वातावरण का होना युवाओं के सही मार्गदर्शन के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के संपर्क में आने वाले व्यक्तियों पर भी वैसा ही गहरा और स्थाई प्रभाव पड़ता है क्योंकि संघ में भी वैसा ही पारिवारिक भाव उपलब्ध कराया जाता है जैसा छात्रावासों में साथ रहते हुए विकसित होता है। कार्यक्रम में रघुवीर सिंह बिंजासी, दिल्ली में कार्यरत रतन सिंह निम्बी जोधा, आबूरोड से अर्जुन सिंह सारोठिया, कुचामन से शिंभू सिंह आसरवा, जोधपुर से दिलीप सिंह रिडमलसर, स्थानीय बंधु प्रभु सिंह भरपालसर, लक्ष्मण सिंह टीटनवाड़, रविंद्र सिंह लिलकी, सरजीत सिंह डूंगरास, मदन सिंह सिसोदिया, किशोर सिंह बरजांगसर आदि पूर्व छात्रों सहित वर्तमान में छात्रावास में रहने वाले युवा भी सहभागी बने। राजेंद्र सिंह आलसर ने सभी को 28 जनवरी को दिल्ली में होने वाले पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। स्नेहमिलन के विभिन्न सत्रों में गीत, चर्चा, पारिवारिक परिचय, अनुभव, सहभोज आदि गतिविधियों का आयोजन हुआ।

श्री राजपूत विद्यासभा गुजरात का द्वितीय सामूहिक विवाह समारोह संपन्न

श्री राजपूत विद्यासभा गुजरात द्वारा द्वितीय सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन अहमदाबाद स्थित हरेंद्रसिंह सरवैया राजपूत विद्यासभा भवन गोता में 3 दिसंबर को किया गया जिसमे 51 नवदंपति का विवाह भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था व रिवाजों के अनुसार संपन्न कराया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मध्य गुजरात संभाग की ओर से पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त सभी नव विवाहित दंपति को यथार्थ गीता भेंट स्वरूप दी गई एवं व्यवस्था में भी सहयोग किया गया। कार्यक्रम में आनंदनाथजी बापू

(शंकरा तीर्थ आश्रम सानंद), शंकरसिंह वाघेला (पूर्व मुख्यमंत्री गुजरात), प्रदीपसिंह जाडेजा (पूर्व गृहमंत्री गुजरात), भूपेंद्रसिंह चूड़ासमा (पूर्व शिक्षा मंत्री गुजरात), केशरीदेवसिंह झाला (राज्यसभा सांसद), घेलुभा वाघेला सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। अश्विनसिंह सरवैया (प्रमुख श्री राजपूत विद्यासभा) के मार्गदर्शन और संस्था के सहयोग से पूरा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि (बालिका)	24.12.2023 से 27.12.2023 तक	विद्या भारती स्कूल, जालोर। **संपर्क सूत्र** - 9460884366, 9413123738
01.	मा.प्र.शि (बालिका)	24.12.2023 से 30.12.2023 तक	द स्टडी सीनियर स्कूल आसपुर जिला - डूंगरपुर **संपर्क सूत्र** - 9352000270, 9982668595, 9602554818, 8003102396

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

विक्रम सिंह तारातरा को मिला मिलेनियर फार्मर ऑफ इंडिया पुरस्कार

बाड़मेर के तारातरा गांव के निवासी प्रगतिशील किसान विक्रम सिंह को बाड़मेर केवीके के माध्यम से जिले में नवाचार करने के लिए मिलेनियर फार्मर ऑफ इंडिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आलु की खेती में उनके द्वारा किए नवाचारों के लिए दिल्ली में 6 दिसंबर को कृषि जागरण व महिंद्रा ट्रैक्टर के तत्वाधान में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत व केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी की उपस्थिति में आयोजित समारोह में उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। उन्होंने एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के साथ अनुबंध कर अपने नवाचारों द्वारा रेगिस्तानी इलाके में आलू, जौ और तरबूज की खेती में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। इससे पूर्व भी विक्रम सिंह अपने कृषि नवाचारों के लिए अनेक सम्मान और प्रशस्ति पत्र प्राप्त कर चुके हैं। 15 अगस्त को उन्हें जिला स्तर पर भी सम्मानित किया गया था। विक्रम सिंह श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक महेंद्र सिंह तारातरा के भाई है।

जयव्रत सिंह चंपावत बने वायुसेना अधिकारी

जालोर जिले के धनानी गांव के निवासी जयव्रत सिंह चंपावत पुत्र अर्जुन सिंह चंपावत 8 दिसंबर को भारतीय वायुसेना की ट्रेनिंग पूरी कर वायुसेना में फ्लाइंग ऑफिसर के रूप में नियुक्त हुए हैं। उनकी इस सफलता पर ग्रामवासियों व समाजबंधुओं ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

समाज चरित्रः पानी का बुलबुला नहीं नींव का पत्थर बनें

वाकपटुता, व्यवहार कुशलता, कुशाग्र बुद्धि, संघर्षशीलता, परिश्रम आदि विभिन्न चारित्रिक विशेषताएं किसी व्यक्ति के विकास की आधारशिला बनती हैं, उसे अन्यों से विशिष्ट पहचान देती हैं और उस पहचान के आधार पर उसे विशिष्ट सुविधाओं और अधिकारों का दावेदार भी बनाती हैं। इसलिए व्यक्ति के चरित्र में ऐसे गुणों के निर्माण के लिए व्यक्ति स्वयं भी प्रयत्नशील होता है, साथ ही उसके निकटवर्ती अन्य लोग भी ऐसे गुणों के निर्माण में उसे सहयोग और प्रोत्साहन भी देते हैं ताकि उस व्यक्ति की विशिष्टता और उसकी भौतिक उन्नति का लाभ उनको भी मिल सके। नैसर्गिक प्रतिभा, व्यक्तिगत प्रयत्न, परिस्थितियों की अनुकूलता और प्रारब्ध के सहयोग से कोई व्यक्ति विशिष्ट बनता है। ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति प्रत्येक कालखंड और समाज में बनी रहती है और आज भी उनकी कोई कमी नहीं है। लेकिन इन व्यक्तियों की विशिष्टता, प्रतिभा और प्रगति का लाभ समाज को कितना मिल रहा है, यह विचारणीय है। जो भी चिंतनशील लोग हैं, वे व्यक्तिगत प्रगति और सामाजिक प्रगति के बीच जो जबरदस्त असंतुलन पनप रहा है और निरंतर बढ़ रहा है, उससे अनभिज्ञ नहीं हैं। जो वर्तमान स्थितियां समाज में दिखाई देती हैं उनसे यह स्पष्ट है कि व्यक्ति की प्रतिभा, विशिष्टता और प्रगति सामाजिक विकास में सहयोगी नहीं हो रही बल्कि कई बार तो व्यक्ति की प्रगति समाज के हितों को अनदेखा करके या उन हितों को नुकसान पहुंचा कर प्राप्त की जाती है। समाज के कुछ व्यक्तियों के शक्तिशाली (आर्थिक, राजनीतिक आदि रूप में) बनने से भी समाज शक्तिशाली होता हुआ नहीं दिखता बल्कि अनेक बार ऐसे व्यक्तियों की स्वच्छंदता, अनैतिकता या हठधर्मिता समाज में विभिन्न प्रकार की कमजोरियां पनपाने वाली ही सिद्ध होती है। व्यक्तिगत प्रगति और सामाजिक प्रगति के बीच इस असंतुलन के कारण की खोज करेंगे तो अंत में एक ही उत्तर मिलेगा और वह है - समाज चरित्र का अभाव। व्यक्तिगत प्रतिभा व विशिष्ट चारित्रिक विशेषताओं के धनी व्यक्तियों की बहुलता होने के बाद भी समाज के रूप में हम शक्तिशाली नहीं है तो उसका कारण व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं पर समाज हित को प्राथमिकता देना सिखाने वाले समाज चरित्र का अभाव ही है। हम देखें, हमारे समाज के कितने व्यक्ति व्यक्तिगत उपलब्धियां प्राप्त करते हैं, कोई विधायक, सांसद और मंत्री बनता है, कोई बड़ा अधिकारी बनता है, कई व्यक्ति बड़े उद्योगपति बनते हैं और कई तो समाज सेवा को ही एक कैरियर बनाकर प्रसिद्धि और आर्थिक लाभ प्राप्त करते हुए भी दिखाई दे जाएंगे। लेकिन निरंतर रूप से समाज के हित में सहयोग करना तो छोड़िए, जब संपूर्ण समाज को उद्वेलित और प्रभावित करने वाले अवसर आते हैं तब उन महत्वपूर्ण अवसरों पर भी समाज हित के लिए कार्य करने की बजाय ऐसे व्यक्ति उस अवसर का उपयोग (दुरुपयोग) अपने व्यक्तिगत लाभ को पूरा करने में ही करने का प्रयास करते हैं। ऐसा होते हुए हम सभी देखते आए हैं और अभी भी देख रहे हैं।

सच्चाई तो यही है कि समाज चरित्र के आधार के बिना व्यक्तिगत विशेषताएं समाज हित में प्रयुक्त नहीं हो सकतीं, बल्कि समाज का अहित करने का साधन बन जाती हैं। इसलिए समाज को सबल करने का कार्य केवल समाज चरित्र को धारण करने वाले व्यक्तियों से ही संभव है। लेकिन यह प्रबल व्यक्तिवाद का दौर है जिसमें व्यक्ति धन, सत्ता, प्रसिद्धि आदि की महत्वाकांक्षाओं को पालते हुए ही जीता है। इस व्यक्तिवाद के दो पहलू हैं। पहला - जिनमें प्रतिभा है, परिश्रम और अध्यवसाय की क्षमता है, जुझारूपन और पराक्रम के गुण हैं, वे इन गुणों का उपयोग कर-के अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में लग जाते हैं और ऐसा करते हुए सफलता-असफलता के चक्र से गुजरते रहते हैं। सफल होकर वे अपनी सफलता का भोग करते हैं और असफल होने पर दुखी होते हैं और फिर से सफल होने के लिए प्रतीक्षा और प्रयत्न करते हैं। दूसरा पहलू उन लोगों का है जिनमें व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं तो उसी तरह की होती है लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए आवश्यक साहस, संघर्षशीलता, साधन, प्रतिभा, परिस्थिति आदि का अभाव होता है। ऐसे में वे जिन सफलताओं को स्वयं प्राप्त नहीं कर सके हैं, उन्हें प्राप्त करने वाले दूसरे व्यक्तियों के प्रशंसक बनते हैं, उनकी व्यक्तिगत सफलताओं के महिमामंडन में प्रवृत्त होते हैं, उन सफलताओं का अतिशयोक्तिपूर्ण प्रचार करके व्यक्तियों की 'Larger than Life' छवि गढ़ने के साधन बनते हैं और इस प्रकार से अपनी महत्वाकांक्षाओं की अग्नि को अप्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट करने का प्रयास करते हैं। गहराई से देखेंगे तो हम में से अधिकांश का जीवन व्यक्तिवाद के इन दो पहलुओं में से किसी एक का प्रतिनिधित्व करता हुआ ही दिखाई देगा। हमें अपने आप को, अपने भावों को और अपने क्रियाकलापों को तौलकर अवश्य देखना चाहिए कि हम इन दोनों में से व्यक्तिवाद के किसी रूप का शिकार तो नहीं हो रहे हैं।

लेकिन समाज चरित्र व्यक्तिवाद के इन दोनों रूपों से बहुत परे की बात है। समाज चरित्र हमारे सभी चारित्रिक गुणों और प्रतिभाओं को समाज हित के सापेक्ष बनाने की साधना है। जिनके भीतर समाज चरित्र होता है वे ही समाज की मांग पर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को छोड़ने को तैयार हो सकते हैं, व्यक्तिगत पसंद-नापसंद को छोड़कर सामूहिक निर्णय की पालना कर सकते हैं और ऐसा करते हुए आलोचना व निंदा को भी प्रसन्नतापूर्वक सहन कर सकते हैं। ऐसे समाज चरित्र को अपनाना, उसका पालन करना बहुत कठिन है। अपनी विशिष्टता का मोह बहुत प्रबल होता है, उसे छोड़कर सामूहिक स्वरूप में अपने आप को गला देना कठिनतम कार्यों में से एक है। आज तो व्यक्तिवाद इतना हावी है कि व्यक्ति पानी के बुलबुले की भांति क्षणिक और व्यर्थ जीवन जी कर भी अपनी विशिष्टता और पृथकता को बनाए रखना चाहता है पर नींव का पत्थर बनकर समाज को सबल बनाने की साधना में स्वयं को समर्पित करना स्वीकार नहीं करता। समाज चरित्र हमें नींव का पत्थर बनने का मार्ग दिखाता है, तो व्यक्तिवाद हमें पानी का बुलबुला बनाकर थोथी विशिष्टता का भ्रम देता है। समाज चरित्र के बिना हमारी समस्त प्रतिभाएं कुछ समय के लिए अपनी स्वार्थपूर्ति में प्रयुक्त होकर उसी प्रकार समाप्त हो जाती है जैसे बुलबुला पानी में कुछ समय अस्तित्ववान रहकर नष्ट हो जाता है। वहीं, समाज चरित्र से हमारी यत्किंचित प्रतिभा और क्षमता भी समाज की नींव में पत्थर बनकर सदा-सदा के लिए अपनी सार्थकता को बनाए रखने में सफल हो जाती हैं। सामाजिक जीवन की विशालता के दृष्टिकोण से देखें तो हमें यह समझ आ जाएगा कि पानी का बुलबुला और नींव का पत्थर बनने में क्या फर्क है। आज राजनीतिक सत्ता को सबसे बड़ी उपलब्धि माना जाता है और इसीलिए व्यक्तिवाद वहां सबसे ज्यादा हावी है, वहीं सबसे ज्यादा संघर्ष भी है और इस संघर्ष में विभिन्न प्रकार के जोड़-तोड़ करके लोग सत्ता के उच्चतम स्थान तक पहुंचने का प्रयास करते हैं। यद्यपि ऐसा करते हुए उनके दावे समाज सेवा और राष्ट्र सेवा के ही होते हैं लेकिन वास्तविकता हम सभी जानते हैं कि अपने को विशिष्टता के शिखर पर पहुंचाने की महत्वाकांक्षा के वशीभूत होकर ही यह प्रयास वे करते हैं। इसमें अनेक लोग सफल भी होते हैं, लेकिन सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की सापेक्षता में देखें तो उनके जीवन भी पानी के बुलबुले के समान ही सिद्ध होते हैं। आजादी के बाद से ही हम देखें तो कितने लोग इस सत्ता की दौड़ में शामिल हुए, शिखर पर भी पहुंचे लेकिन आज उनकी क्या स्थिति है? उनकी स्मृति बनाए रखने के लिए भी चौराहों, सड़कों, उद्यानों और योजनाओं को उनका नाम देकर प्रयास करने पड़ते हैं। सरकारी अथवा दलगत कोष से स्मारक बनाकर, प्रायोजित जयंतियां आदि मना कर उन्हें जीवित रखने का प्रयास किया जाता है लेकिन वास्तव में कोई भी व्यक्ति भौतिक रूप से संसार से विदा होने के बाद केवल किसी के हृदय की प्रेरणा बनकर ही जीवित रह सकता है। यह प्रेरणा पानी के बुलबुलों सा व्यक्तिवादी जीवन जीने वालों से नहीं जगती बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में नींव का पत्थर बनने वालों का जीवन ही ऐसी प्रेरणा जगा सकता है। इसीलिए राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, प्रताप, दुर्गादास, तनसिंह जी जैसे व्यक्तियों की स्मृति जनमानस में सदैव बनी रहती है और अनेकों लोग उन्हें स्वतः स्फूर्त भाव से स्मरण करके अपने जीवन को प्रेरणा से भरते हैं, उनके दिखाए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करते हैं। जबकि सत्ताधारियों और राजनेताओं को तो उनके स्वयं के साथी या दल भी तभी तक स्मरण करते हैं जब तक उनके नाम से उनके राजनीतिक स्वार्थ सधते हों।

इन सब बातों को समझ कर ही पूज्य तनसिंह जी ने समाज चरित्र को श्री क्षत्रिय युवक संघ का मूल आधार बनाया है। संघ का मुख्य कार्य समाज चरित्र का निर्माण करना ही है। व्यक्तिवाद, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और स्वार्थपूर्ति के जमाने में समाज चरित्र का निर्माण करना अत्यंत कठिन कार्य है। यह हमने हाल ही में चुनावों के समय भी देखा। सामाजिक हित के लिए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का त्याग करने के उदाहरणों को जब समाज के सामने रखकर समाज चरित्र की प्रेरणा जागृत करने का प्रयास किया गया तब अपनी व्यक्तिगत पसंद-नापसंद के वशीभूत हो व्यवहार करने वालों द्वारा उस प्रयास का मखौल उड़ाया गया। व्यापक सामाजिक हित के लिए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा को सीमित करने का जहां निवेदन किया गया तो उस निवेदन का तिरस्कार ही नहीं किया गया बल्कि निकृष्ट, अशोभनीय और अमर्यादित तरीके से विरोध भी किया गया। इस विरोध से कुछ नए साथी चिंतित भी हुए, तब एक वरिष्ठ साथी का यह कहना कि - समाज में कार्य करते हुए समाज द्वारा दिया भोजन, स्नेह और सम्मान हमने प्रसन्नता से लिया है तो विरोध और गालियों को भी उसी प्रसन्नता से स्वीकार करेंगे, लेकिन कर्तव्य मार्ग पर तो चलते ही रहेंगे - समाज चरित्र का कितना सुंदर उदाहरण है। संघ यही सिखाता है। समाज के हित के आगे सभी व्यक्तिगत पसंद-नापसंद, महत्वाकांक्षाएं और स्वार्थ त्याज्य है। हमें भी अपने जीवन के संबंध में यह निर्णय ले लेना चाहिए कि हमें पानी के बुलबुले वाला जीवन जीना है या नींव के पत्थर वाला। भली भांति यह विचार कर लेना चाहिए कि कौनसा जीवन जीने में सार्थकता है। साथ ही यह भी निश्चय कर लेना चाहिए कि किसी की वैयक्तिक सफलताओं के आकर्षण से प्रभावित होकर हम उसके प्रशंसक और समर्थक बनते हैं अथवा सामूहिक निर्णय को अपना निर्णय मानकर समाज के सामने नमनशील होने वालों से प्रेरणा लेकर उनके सहयोगी बनते हैं। क्योंकि यह दौर कितना ही व्यक्तिवादी हो, सामूहिक और सांघिक शक्ति के बिना इस युग में जनमानस को दिशा देना संभव नहीं है और इस शक्ति का निर्माण बातों से नहीं बल्कि सक्रिय सहयोग से ही हो सकता है। पूज्य तनसिंह जी के इस कथन को हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि - 'अब व्यक्तिगत प्रतिभाओं को सामाजिक प्रतिभा के लिए रास्ता दे देना चाहिए, अन्यथा जनमानस की भावतरंग का प्रवाह ऐसी समस्त व्यक्तिगत प्रतिभाओं को परास्त कर देगा।'

जय संघ शक्ति।

महेंद्र सिंह तारातरा

योग से दूर होगी सर्वाइकल की समस्या

लगातार बढ़ते कंप्यूटर के उपयोग से सर्वाइकल की समस्या भी बढ़ने लगी है। कई बार काम के दौरान लैपटॉप या कंप्यूटर की स्क्रीन को ज्यादा देर तक देखने के कारण भी गर्दन में अकड़न आ जाती है। ऐसा कई बार कंप्यूटर पर घंटों तक लगातार काम करने से होता है। तेजी से बढ़ते आधुनिकता के इस दौर में घंटों कंप्यूटर पर काम करना आम बात हो गयी है। ऐसे में बड़ों के साथ-साथ बच्चों में भी सिर दर्द, उंगलियों में दर्द, कमर और कंधों में दर्द जैसी समस्याएं आम हो गयी हैं। एक ही जगह पर बैठे रहने से पीठ दर्द और सर्वाइकल जैसी समस्याएं हो रही हैं। यह देर तक बैठने का काम करने वालों में कॉमन परेशानी पहले ही थी, लेकिन आजकल की लाइफस्टाइल के चलते यह समस्या और भी अधिक बढ़ रही है। बच्चों तक में सर्वाइकल के लक्षण देखे जा रहे हैं। ऐसे में यह समझना जरूरी है कि सर्वाइकल क्या है? इसके लक्षण कैसे पहचानें और इससे बचने के लिए किन उपायों का पालन करें। इस लेख में यही जानकारी दी जा रही है। गर्दन में दर्द, हाथ और पांव में दर्द होना सर्वाइकल के शुरूआती लक्षण माने जाते हैं। सर्वाइकल के दर्द से बचने के लिए आम तौर पर योगासन और फिजिकल एक्सरसाइज की सलाह दी जाती है। ऐसे पांच आसन जो सर्वाइकल से छुटकारा दिला सकते हैं, उनकी जानकारी यहां प्रस्तुत है। यही नहीं, इन आसनों को करने से पेट की चर्बी कम करने में भी मदद मिलेगी। साथ ही स्लिप डिस्क, स्पॉन्डिलाइसिस, वर्टिगो और फ्रोजन शोल्डर जैसी समस्याओं में भी राहत मिल सकती है। आइए जानते हैं इन योगासनों को सही ढंग से कैसे किया जाए।

1. मत्स्यासन: जमीन पर सीधे लेट जाएं। अपने हाथों को अपने नितम्बों के नीचे रखें लेकिन अपनी हथेलियों को जमीन में ऊपर रखें। सांस लेते हुए अपने सिर और छाती को जमीन से ऊपर उठाएं, छाती को ऊपर की ओर खींचते हुए, धीरे-धीरे अपने सिर को पीछे तब तक झुकाएं जब तक कि वह धीरे-धीरे फर्श को न छू लें। अपनी कोहनी को फर्श पर रखें और अपने पूरे शरीर का वजन अपनी कोहनी पर डालें। ध्यान रहे कि आपका वजन आपके सिर पर नहीं आना चाहिए। वजन पूरा कोहनियों पर आना चाहिए।

2. मकरासन: मकरासन करने के लिए सबसे पहले पेट के बल लेट जाएं। अपनी कोहनियों को जमीन पर रख दें और हाथों को चिन पर रख दें। साथ ही, सिर और कंधों को ऊपर की ओर उठा लें। आपके पैरों के बीच उचित दूरी होनी चाहिए। अपने शरीर को पूरी तरह से ढीला छोड़ दें। अपने ध्यान को केंद्रित करें और सांस लेते रहें। थोड़ी देर बाद आंखें खोलें और फिर से इस आसन को दोहराएं।

3. भुजंगासन: इसको करने के लिए किसी खुली जगह पर पेट के बल लेट जाएं। अपनी चिन को जमीन पर लगाएं। दोनों पैरों को एक दूसरे के पास लाएं, जिससे आपके दोनों पैर और एड़ी एक दूसरे को छुएं। अपनी हथेलियों को कंधों की सीध में लाएं और सांस लेते हुए अपने शरीर के अगले भाग को उठाएं और सिर को पीछे की ओर झुकाएं। ध्यान रहे कि आपकी कमर में अधिक खिंचाव न आए। अब धीरे-धीरे सांस लें और छोड़ दें। सांस को छोड़ते हुए सामान्य अवस्था में आएं। इस प्रक्रिया को दोहराएं।

4. धनुरासन: धनुरासन को करने के लिए पेट के बल जमीन पर लेट जाएं, पैरों के बीच कम दूरी रखें और दोनों हाथों को शरीर के दोनों तरफ सीधा रखें। अब अपने घुटनों को मोड़ें और कमर के पास लाएं, इसके साथ ही एड़ियों को अपने हाथों से पकड़ें। सांस लेते हुए छाती को जमीन से ऊपर उठाएं और एड़ियों को खींचने की कोशिश करें। एड़ियों को खींचते हुए सिर को सीधा रखें। इसी तरह से सांस लें और छोड़ें। इस तरह से आपका शरीर एक धनुष के आकार का होगा। ध्यान रहे इस आसन को करते समय अपने शरीर को अधिक न कसें। कुछ देर बाद सांस खींचते हुए अपने पैर और छाती को फिर से सामान्य स्थिति में वापस लाएं।

5. सूर्य नमस्कार: सूर्य नमस्कार करने के 12 चरण होते हैं, हर एक चरण अपने आप में एक सम्पूर्ण आसन की तरह है, सर्वाइकल में सूर्य नमस्कार बहुत फायदेमंद है। लेकिन अगर आप पहली बार सूर्य नमस्कार कर रहे हैं तो किसी विशेषज्ञ की राय जरूर लें। यदि उपरोक योगासनों का नियमित अभ्यास किया जाए तो काफी हद तक हम सर्वाइकल की समस्या से निजात पा सकते हैं।

(अलका सिंह, योग एक्सपर्ट)

'काश ऐसा हुआ होता !..'

भारत माता के सच्चे सपूत है राजपूत, जिन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी बलिदान देकर मातृभूमि को अपने खून से सींचा है। देश की आन, बान और शान हैं राजपूत। राजपूती धर्म - 'विजय या वीरगति' केवल जुमला नहीं है बल्कि इसके पीछे अनगिनत शौर्य गाथाएँ जग चावी हैं। आज भी सर्व समाज जब भारत के गौरवशाली इतिहास का विश्लेषण करते हैं तो कहते है कि - 'काश! इन राजपूत युवाओं को कोई इनके कर्त्तव्य का बोध करवा दे तो ये आज भी भारत की शान बन सकते हैं।'

जरा सोचें! वर्तमान में लोकतंत्र के दौर में हमारी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न क्यों लग रहा है? काश! हम बदलते दौर के अनुरूप स्वयं को ढाल पाते। काश! हम सामाजिक एकता कायम रख पाते।

गौरवशाली ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाला हमारा समाज पिछली शताब्दियों में कर्त्तव्य-मार्ग से भटक गया था जिसका खामियाजा सम्पूर्ण भारत वर्ष को भोगना पड़ा। काश! वर्तमान में हम उन ऐतिहासिक भूलों से सबक लेकर एकजुट होकर रहना सीख लेते।

काश! कोई सर्वमान्य व शाश्वत संगठन होता जो हमें एक सूत्र में बांध पाता।

काश! कोई महामानव इस धरती पर अवतरित होकर हमें हाथ पकड़कर सही राह पर जबरन खींच लाता। भटके हुओं को रास्ता दिखाने हेतु काश! कोई प्रकाश पुंज अथवा प्रेरणा पुंज हमें समय रहते मिल जाता। हमारे पूर्वज सर्व समाज की ढाल बनकर जीते व मरते थे, पर क्या हुआ कि हम अन्य लोगों का स्नेह खोते जा रहे हैं। हमारा ईश्वरीय भाव क्यों लुप्त हो गया? भावों का सागर सूख क्यों गया? कौन आएगा हमें गीता के तत्व को समझाने? कौन समझाएगा कि हमारे जीवन का हेतु ही सर्व समाज का संरक्षण करना है। हम हमारी उपयोगिता को कैसे साबित करें? यह संस्कार निर्माण का बीड़ा कौन उठाएगा? काश! कोई हमें किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति से बाहर निकाल कर सही मार्गदर्शन कर पाता।

सनातन धर्म की क्षात्र-परंपरा की शिक्षा कौन देगा? कौन बताएगा कि रूढ़ियों को क्यों व कैसे छोड़ें? काश! कोई हमें हमारी महान थातियों की जानकारी देकर उन पर गर्व करना सीखा जाता। काश! हम अपने महानतम पूर्वजों के जीवन चरित्र को पढ़ व समझ पाते। काश! कोई गुरु हमें भी मिल जाता जो पूर्वजों के जीवन चरित्र का एक पाठ ही पढा जाता।

काश! कोई हमें धर्म-कर्म की प्रेरणा दे जाता, जिससे हमारे जीवन की उपयोगिता बढ़ जाती।

काश! कोई समझा जाता कि जातिवाद व सांप्रदायिकता से परे भी दुनिया है जो बेहद खूबसूरत भी है। औरों के जीवन हेतु स्वयं को उत्सर्ग की राह पर तैयार करने की प्रेरणा कहाँ से लाऊं? काश! कोई मुझे प्रेरणा की भीख ही दे जाता।

स्वार्थपूर्ण भौतिकवादी जगत में कौन अपना है व कौन पराया? काश! कोई स्नेह- सरिता की बाढ़ बहा लाता, जो अपनत्व के सागर में डुबो कर हमें धन्य कर जाती।

काश! कोई हमारी जड़ता को दूर कर हमें चेतना प्रदान कर जाता। हमारे अहंकार को राष्ट्रीय स्वाभिमान में बदल जाता व हमें व्यक्तिवाद के रोग से मुक्त कर 'समाज चरित्र' की समझ दे जाता। काश! हम दुर्व्यसनों व रूढ़ियों के चक्रव्यूह से निकल कर स्वतंत्र व सात्विक जीवन का आनन्द उठा पाते।

काश! कोई जाम्बवन्त आकर हमारी सोई शक्ति को जगा जाता और हम श्रेष्ठता का वरण कर पाते।

मैं अकेला बैठा कल्पना करता हूँ कि काश! सतयुग लौट आता, तो कितना अच्छा होता। कल्पना करने हेतु हम सभी स्वतंत्र है सो मैंने कल्पना के घोड़े दौड़ाकर क्या गलत किया? क्रियान्विति के बिना विचार अथवा कल्पना का कोई महत्व नहीं है। ईश्वरीय कृपा से उपरोक्त सभी उलझनों का समाधान भी पूज्य तन सिंह जी ने 77 वर्ष पहले खोज निकाला जो केवल कल्पना या विचार नहीं बल्कि उसे धरती पर उतारने हेतु क्रियान्विति में संलग्न है।

सभी समस्याओं का एक ही समाधान है -

'श्री क्षत्रिय युवक संघ'

रतन सिंह बडोड़ा गाँव, जैसलमेर 9680513413

(पृष्ठ एक का शेष)

दूजोद... उन्होंने कहा कि युवाओं को भारत को विश्वगुरु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है तो उन्हें पुस्तकालय, देवालय की ओर लौटना होगा। उन्होंने अमर शहीद अशोक सिंह जी की माता चाव कंवर का उदाहरण देते हुए कहा कि माता को ऐसे ही पुत्र को जन्म देना चाहिए जो देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाने के लिए प्राण न्योछावर करने को भी तत्पर हो। शहीद के भ्राता सूबेदार गजेंद्र सिंह ने अशोक सिंह के जीवन के विभिन्न संस्मरण सुनाते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में बताया। बंजरग सिंह व संदीप सिंह ने भी सभा को संबोधित किया। समारोह में शहीद की माताजी चाव कंवर, वीरांगना किरण कंवर, बहिन भंवर कंवर का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। सरपंच प्रतिनिधि विक्रम सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। अनावरण समारोह में बाबू सिंह बाजोर, रामेश्वर रणवा, शोभ सिंह अनोखु, विजेंद्र सिंह (सरपंच सांवलोदा), गोपाल सिंह (खाखोली सरपंच), भंवर सिंह नाथावतपुरा सहित सैकड़ों क्षेत्रवासियों ने उपस्थित होकर शहीद को श्रद्धांजलि दी। मंच संचालन डॉ. ईश्वर सिंह सांवराद ने किया। उल्लेखनीय है कि दूजोद निवासी अशोक सिंह 1978 में सेना में भर्ती हुए थे। 12 मई 2002 को कश्मीर के डोडा में नियुक्ति के दौरान उन्होंने सर्च ऑपरेशन के दौरान तीन आतंकियों को मार गिराया, लेकिन स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हो गए।

मोढ़ा बंधुओं को पितृशोक

श्री माल सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक महिपाल सिंह मोढ़ा व विपेन्द्र सिंह मोढ़ा के पिता **श्री माल सिंह** का देहावसान 09 दिसंबर 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

सुरुभा नटुभा डेरवाडा का देहावसान

सुरुभा नटुभा डेरवाडा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **सुरुभा नटुभा डेरवाडा** (जिला - सुरेंद्रनगर) का देहावसान 25 नवंबर को 76 वर्ष की आयु में हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के 3 शिविर किए। 23 से 26 अगस्त 1991 तक डेरवाड़ा में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर उनका पहला शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

राजस्थान में 20 व मध्यप्रदेश में 25 राजपूत विधायक निर्वाचित

3 नवंबर को राजस्थान मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ राज्य के विधानसभा चुनावों के परिणाम घोषित हुए। इन चुनावों में राजस्थान में 199 विधानसभाओं में से 20 पर राजपूत विधायक चुन कर आए हैं। इनमें 16 विधायक भारतीय जनता पार्टी से, एक विधायक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से व एक विधायक बहुजन समाज पार्टी से चुने गए हैं, वहीं 2 विधायक निर्दलीय के रूप में चुन कर आए हैं। इसी तरह मध्यप्रदेश में 230 विधानसभाओं में से 25 पर राजपूत विधायक विजयी हुए हैं। इनमें 16 विधायक भाजपा से व 9 विधायक कांग्रेस से चुने गए हैं। दोनों राज्यों के राजपूत विधायकों की सूची यहां प्रकाशित की जा रही हैं।

राजस्थान के राजपूत विधायक

1.	राज्यवर्धन सिंह	झोटवाड़ा (भाजपा)
2.	दीया कुमारी	विद्याधर नगर (भाजपा)
3.	देवी सिंह शेखावत	बानसूर (भाजपा)
4.	विक्रम सिंह जाखल	नवलगढ़ (भाजपा)
5.	बाबूसिंह राठौड़	शेरगढ़ (भाजपा)
6.	गजेन्द्र सिंह खींवसर	लोहावट (भाजपा)
7.	अंशुमान सिंह भाटी	कोलायत (भाजपा)
8.	हमीर सिंह भायल	सिवाना (भाजपा)
9.	पुष्पेंद्र सिंह राणावत	बाली (भाजपा)
10.	सिद्धि कुमारी	बीकानेर पूर्व (भाजपा)
11.	छोटू सिंह भाटी	जैसलमेर (भाजपा)
12.	महंत प्रताप पुरी	पोकरण (भाजपा)
13.	वीरेन्द्र सिंह कानावत	मसूदा (भाजपा)
14.	कल्पना देवी	लाडपुरा (भाजपा)
15.	विश्वराज सिंह मेवाड़	नाथद्वारा (भाजपा)
16.	सुरेंद्र सिंह राठौड़	कुंभलगढ़ (भाजपा)
17.	समरजीत सिंह	भीनमाल (कांग्रेस)
18.	मनोज न्यांगली	राजगढ़ (बसपा)
19.	रविन्द्र सिंह भाटी	शिव (निर्दलीय)
20.	चंद्रभान सिंह आक्या	चितौड़गढ़ (निर्दलीय)

मध्यप्रदेश के राजपूत विधायक

1.	कामाख्या प्रताप सिंह	महाराजपुर (भाजपा)
2.	सुरेंद्र सिंह गहरवार	चित्रकूट (भाजपा)
3.	नरेंद्र सिंह तोमर	दिमनी (भाजपा)
4.	मोहन सिंह राठौड़	भितरवार (भाजपा)
5.	तेजबहादुर सिंह	नागदा खाचरौद (भाजपा)
6.	प्रद्युमन सिंह तोमर	ग्वालियर (भाजपा)
7.	गोविंद सिंह	सुरखी (भाजपा)
8.	बृजेंद्र प्रताप बुंदेला	पन्ना (भाजपा)
9.	विक्रम सिंह	रामपुर बाघेलान (भाजपा)
10.	दिव्यराज सिंह	सिरमौर (भाजपा)
11.	विजयपाल सिंह	सोहागपुर (भाजपा)
12.	नरेंद्र सिंह कुशवाह	भिंड (भाजपा)
13.	नगेंद्र सिंह	नागौद (भाजपा)
14.	नागेंद्र सिंह	गुढ़ (भाजपा)
15.	ऊषा ठाकुर	महू (भाजपा)
16.	दिलीप सिंह परिहार	नीमच (भाजपा)
17.	सतीश सिकरवार	ग्वालियर पूर्व (कांग्रेस)
18.	जयवर्द्धन सिंह	राघौगढ़ (कांग्रेस)
19.	यादवेंद्र सिंह बुंदेला	टीकमगढ़ (कांग्रेस)
20.	नितेंद्र सिंह राठौड़	पृथ्वीपुर (कांग्रेस)
21.	चन्दा सिंह गौर	खरगापुर (कांग्रेस)
22.	राजेंद्र कुमार सिंह	अमरपाटन (कांग्रेस)
23.	अजय सिंह	चुरहट (कांग्रेस)
24.	रजनीश सिंह	केवलारी (कांग्रेस)
25.	भंवर सिंह शेखावत	बदनाबर (कांग्रेस)

उल्लेखनीय है कि राजस्थान में भाजपा द्वारा राजपूतों को 26 टिकट दिए गए थे, जबकि कांग्रेस ने 14 टिकट दिए थे। वहीं, मध्यप्रदेश में भाजपा ने 27 व कांग्रेस ने 32 राजपूतों को टिकट दिए थे।

सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की हत्या, देश भर में हुए विरोध प्रदर्शन

सामाजिक कार्यकर्त्ता और श्री राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की जयपुर के श्यामनगर स्थित उनके घर में 5 दिसंबर को गोली मारकर हत्या कर दी गई। गोलीबारी की इस घटना में उनके अतिरिक्त एक अन्य व्यक्ति नवीन सिंह शेखावत की भी मृत्यु हुई तथा 3 अन्य व्यक्ति घायल हुए। राज्य की राजधानी में दिनदहाड़े पेशेवर अपराधियों द्वारा की गई इस नृशंस हत्या के विरोध में बड़े पैमाने पर सर्वसमाज के लोगों द्वारा विरोध प्रदर्शन कर आक्रोश व्यक्त किया गया एवं 6 दिसंबर को पूरे राजस्थान में बंद का आयोजन हुआ।

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक व श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने मेट्रो मास अस्पताल जाकर स्व. सुखदेव सिंह की पार्थिव देह पर श्रद्धांजलि अर्पित की एवं वहां आयोजित धरने में शामिल हुए। पूरे राज्य में अनेक स्थानों पर समाजबंधुओं द्वारा एकत्रित होकर अपराधियों के विरुद्ध तुरंत और कड़ी कार्रवाई हेतु प्रशासन को ज्ञापन सौंपे गए। उल्लेखनीय है कि सुखदेव सिंह ने अपनी जान को खतरा बताते हुए पुलिस से सुरक्षा की मांग भी की थी, साथ ही पंजाब पुलिस द्वारा राजस्थान पुलिस को उनकी जान को खतरा होने की जानकारी भी दी गई थी लेकिन प्रशासन की गंभीर लापरवाही के चलते उन्हें पर्याप्त सुरक्षा नहीं प्रदान की गई जिसका परिणाम उनकी हत्या की दुखद घटना के रूप में सामने आया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष: 2466353 व 2466387) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org